हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो) की प्रकृति और उनका का स्वभाव

अल्लाह पर ईमान और अल्लाह में विश्वास के बारे में बात करते समय हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो), उनके स्वभाव के बारे में भ्रम और कई दावों को देखते हुए, उन की प्रकृति और उन के स्वभाव को संबोधित करना आवश्यक है।

कुछ ईसाई अल्लाह को मानव रूप में अवतरित करके दावा करते हैं कि पृथ्वी पर "हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो) एक ईश्वर हैं" या "तीनों में से तीसरा" हैं।

ईसाई बाइबिल के अनुसार, हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो); वह पैदा हुवे थे, वह खाते, पीते, सोते, और प्रार्थना करते थे, और उसका ज्ञान सीमित था, जबकि ये सभी विशेषताएं अल्लाह के योग्य नहीं हैं। अल्लाह में पूर्णता के गुण हैं, जबकि इसके विपरीत मनुष्य में इस पूर्णता का उल्टा है। कोई चीज़ एक ही समय में दो विपरीत चीज़ों के रूप में कैसे हो सकती है - मतलब पूर्ण और अपूर्ण - यह उचित हो ही नहीं सकता।

हालाँकि, कुछ लोग पूछ सकते हैं, यदि अल्लाह सर्वशक्तिमान है, तो वह मनुष्य क्यों नहीं बन सकता?

अल्लाह की परिभाषा के आधार पर, अल्लाह ऐसे कार्य नहीं करता है जो उसके, सर्वशक्तिमान के योग्य नहीं हैं। इसलिए, यदि अल्लाह एक इंसान बन गया और मानवीय विशेषताओं से युक्त हो गया, तो वह आवश्यक रूप से अब अल्लाह नहीं रहेगा।

इसके अलावा, ईसाई बाइबिल में कई निशानियाँ हैं जिनमें हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो)अल्लाह के सेवक के रूप में बोलते हैं और कार्य करते हैं, और अल्लाह उनसे भिन्न और अलग हैं।

उदाहरण के लिए, मैथ्यू अल इसहाह, अध्याय 26:39 में है, वह अपने चेहरे के बल गिर गए और ईबादत की।

यदि हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो) अल्लाह होते, तो क्या अल्लाह के लिए उनके चेहरे के बल गिरना, साष्टांग प्रणाम करना उचित है? वह किसे साष्टांग प्रणाम कर रहे थे?

कुछ ईसाई दावा करते हैं कि हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो) अल्लाह के पुत्र हैं, और हमें खुद से पूछना चाहिए कि वास्तव में इसका क्या मतलब है?

अल्लाह वास्तव में या अर्थ में पुत्र पैदा करने के लिए बहुत महान है।

इसके अलावा, हम पाते हैं कि "ईश्वर का पुत्र" शब्द का प्रयोग प्राचीन बाइबिल भाषाओं में धर्मी सेवकों को व्यक्त करने के लिए प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है। इसका उपयोग पुराने किताबों (टेस्टामेंट) में डेविड, सुलैमान और जैकब जैसे कई नबियों के लिए बड़े पैमाने पर किया गया था - और यह शब्द केवल हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो) तक ही सीमित नहीं है।

इसका एक उदाहरण उनका यह कथन है, "...इस्राएल मेरा पहलौठा पुत्र है" (सफ़र अल ख़ुरूज 22:4)

"ख़ुदा कि लिए यें किसी तरह सज़ावार नहीं कि वह (किसी को) बेटा बनाए वह पाक व पकीज़ा है" (अल मरयम: (35))

इस्लाम में हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो) पर विश्वास अल्लाह और उनकी महानता में विश्वास बनाए रखते हुए हज़रत ईसा मसीह की सच्चाई के बारे में सही विश्वास है। हज़रत ईसा मसीह, शांति उन पर हो, सर्वशक्तिमान अल्लाह द्वारा अकेले अल्लाह की ईबादत करने के लिए भेजे गए एक महान दूत थे।

तो...मैं यहाँ क्यों हूँ?

हर कोई मानता है कि शरीर के अंग, जैसे आंखें, कान, मस्तिष्क और हृदय, के अस्तित्व का एक विशिष्ट उद्देश्य है। तो फिर, क्या यह उचित नहीं है कि संपूर्ण व्यक्ति के भी अपने अस्तित्व का एक उद्देश्य है?

सर्वशक्तिमान, बुद्धिमान अल्लाह ने हमें बिना किसी उद्देश्य के जीवन में यूँही इधर उधर सर मारने के लिए नहीं बनाया है, न ही उसने हमें केवल खाने , पीने और संभोग करने के लिए और अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए बनाया है।

हमारे पास एक उच्च लक्ष्य और एक बड़ा उद्देश्य है, जो सर्वशक्तिमान अल्लाह के अस्तित्व को स्वीकार करना और अकेले उसकी ईबादत करना है, ताकि हम अपने निर्माता के मार्गदर्शन के अनुसार जी सकें, और यह मार्गदर्शन हमें एक खुशहाल और धन्य जीवन की ओर ले जाएगा।

इस मार्गदर्शन में ऐसे कार्य शामिल हैं जो व्यक्ति को लाभ पहुंचाते हैं, जैसे ईबादत करना, साथ ही समाज, जैसे पड़ोसी के प्रति परोपकार, परिवार की देखभाल, ईमानदारी और जानवरों की देखभाल शामिल है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने हमें अपने अलावा किसी और की ईबादत करने से मना किया है, चाहे वह कोई मूर्ति, सूर्य, चंद्रमा, रब्बी, महंत या यहां तक कि पैगंबर ही क्यों न हो। सर्वशक्तिमान अल्लाह को किसी वसीला, भागीदार या मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है। हर कोई सीधे और किसी भी समय अल्लाह की ईबादत करते हुवे उन से मांग सकता है।

अल्लाह ने इस जीवन को परीक्षा का मैदान बनाया है, और लोगों की परीक्षा कई तरीकों से की जाती है। हमारे साथ जो होता है उसे हम नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन हमारे साथ जो होता है उस पर हम अपनी प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित कर सकते हैं। उन साधनों में से जो हमें सर्वशक्तिमान अल्लाह के करीब लाते हैं और हमें जन्नत में प्रवेश कराते हैं, वे हैं जो कठिनाई के समय में हमें धैर्य और हमेशा आशीवाद के लिए हमें उभारते हैं। अल्लाह ने हमें नरक की सजा के बारे में भी चेतावनी दी है यदि हम अविश्वास को चुनते हैं या उनकी आज्ञाओं की नाफ़रमानी करते हैं।

तो...मुझे अब क्या करना चाहिए?

किसी के ईमान की परीक्षा अल्लाह के अस्तित्व के साक्ष्य पर विचार करने और उसे पहचानने के लिए अपनी अक़्ल और दिमाग का उपयोग करना है, और उसकी आज्ञाओं और निषेधों के अनुसार जीना है। और यह अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करके किया जाता है, जिसका अरबी में अर्थ है; "मुस्लिम" बनना।

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने इस्लाम को सभी के लिए बहुत आसान बनाया है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि, विश्वास या वर्तमान स्थिति कुछ भी हो। इसलिए, कोई भी केवल निम्नलिखित गवाही का उच्चारण करके और उस पर ईमान ला कर, उसका अर्थ जानकर और उसके अनुसार कार्य करके मुसलमान बन सकता है:

"मैं गवाही देता हूं कि एक अल्लाह के अलावा कोई अल्लाह नहीं है, और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के नबी हैं"

क्या अब भी आपके लिए अपने लक्ष्य की ओर प्रयास करने का समय नहीं आ गया है? जिसके लिए आपको बनाया गया है, कि आप सत्य को स्वीकार करें और उसके प्रति समर्पण करें, और एक अल्लाह के अस्तित्व को स्वीकार करें और केवल उसी की पूर्ण ईबादत करें?

Our Official **WEBSITE**
To **DONATE** to projects

صباح السالم - قطعة 3 - شارع 304
- مبنـــي 84 - دور 3 - مكتـــب 10
الخـــط الساخـــن: 9772 2526
واتســـــــــآب: 9980 4542
albayan.kw@outlook.com

ما الغاية من الحيـــــاة؟

هندي

जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य क्या है?

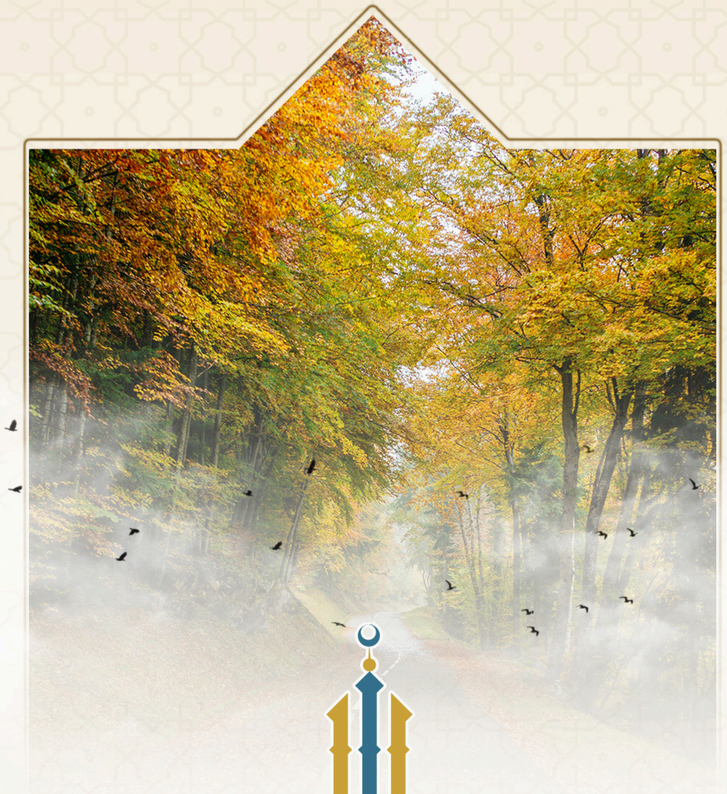

جمعية البيان للتعريف بالإسلام
Al Bayan association to introduce Islam

जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य क्या है ?

> मैं कहाँ से आया हूँ? मैं इस जीवन में क्यों हूँ? मरने के बाद मैं कहाँ जाऊँगा?

जब हम अपने अस्तित्व और जीवन के उद्देश्य के बारे में सोचते हैं, तो उस समय सबसे पहला प्रश्न जो मन में आता है वह यह है कि: "हम कहाँ से आए हैं?"

क्या हम अनियमित तथा यादृच्छिक रूप से और यूँही प्राकृतिक संयोग से पैदा हो गए? या एक बुद्धिमान रचनाकार के कार्य से? रचनाकार के अस्तित्व को स्वीकार करना जीवन में हमारे वास्तविक उद्देश्य को समझने का पहला कदम है। रचनाकार के अस्तित्व में विश्वास की वैधता के कई तार्किक अवं तर्कसंगत कारण हैं। हम संक्षेप में उनमें से केवल तीन का उल्लेख निम्न में करते हैं:

1. इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और बनावट

इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और बनावट ही पहला प्रमाण है जो एक रचनाकार और ईश्वर के अस्तित्व को इंगित करता है।

आप केवल कल्पना करें, कि यदि आप एक रेगिस्तान में चल रहे हैं, और आपको एक घड़ी मिलती है। हम जानते हैं कि घड़ी कांच, प्लास्टिक और धातु से बनी होती है। कांच रेत से बना होता है, प्लास्टिक पेट्रोलियम से बना होता है, और धातु जमीन से निकाली जाती है – और ये सभी तत्व रेगिस्तान में ही पाए जाते हैं। यहाँ क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि इस घड़ी ने ख़ुद अपना आकार बनाया और इस का निर्माण ख़ुद से हो गया? जहां कि सूरज निकला और चमका, फिर हवा चली, बिजली जली, फिर तेल सतह पर तैरा और रेत और खनिजों के साथ मिल गया, फिर यादृच्छिक संयोग या प्रकृति से लाखों वर्षों के दौरान घड़ी एक साथ जमा हो गई?

मानवीय अनुभव और सरल तर्क हमें बताते हैं कि जिस चीज़ की शुरुआत हुई हो, इसका अस्तित्व शून्य से नहीं हो सकता, न ही वह स्वयं का निर्माण कर सकती है। इसलिए, सबसे तर्कसंगत व्याख्या यह है कि एक रचनाकार और निर्माता है जिसने इस ब्रह्मांड को बनाया है। इस "रचनाकार निर्माता" का सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ होना भी ज़रूरी होगा, क्योंकि उसने इस संपूर्ण ब्रह्मांड को अस्तित्व में लाया और ब्रह्मांड को नियंत्रित करने के लिए "विज्ञान और इल्म के नियम" बनाए।
ये सभी गुण ब्रह्मांड के निर्माता ईश्वर की मूल अवधारणा का गठन करते हैं। यह पूरी तरह से आधुनिक विज्ञान के अनुरूप भी है, जो यह निष्कर्ष निकालता है कि ब्रह्मांड एक सीमित है और इसकी शुरुआत हुई थी।

कोई पूछ सकता है: "अल्लाह को किसने बनाया? रचनाकार निर्माता, ईश्वर अपनी रचना से भिन्न है। जब ईश्वर अनंत काल से अस्तित्व में है और उसकी कोई शुरुआत नहीं है। तो, यह प्रश्न कि ईश्वर को किसने बनाया, एक विसंगत तथा अतार्किक प्रश्न होगा।

2 इस ब्रह्माण्ड के निर्माण में बारीकियाँ और महानता

दूसरा प्रमाण जो सर्वज्ञ निर्माता अल्लाह के अस्तित्व को इंगित करता है वह इस जटिल ब्रह्मांड का पूर्ण क्रम और संतुलन है।

इस ब्रह्मांड की कई विशेषताएं स्पष्ट रूप से इंगित करती हैं कि इसे विशेष रूप से जीवन के लिए तैयार किया गया था, जैसे कि पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी, पृथ्वी की परत की मोटाई, वायुमंडल में ऑक्सीजन का प्रतिशत और यहां तक कि पृथ्वी तापमान और डिग्री भी। यदि ये माप अब की तुलना में थोड़े भिन्न होते; तो इस धरती पर रहना नामुमकिन हो जाता।

चूँकि घड़ी को सटीक समय बताने के लिए कोई जानकार निर्माता होना चाहिए, इसलिए इस पृथ्वी को इसे सुरक्षित रखने के लिए भी कोई जानकार निर्माता होना चाहिए। क्या ऐसा अपने आप हो सकता है?

और जब हम अपने भीतर और पूरे ब्रह्मांड में व्यवस्था, कानून और सूक्ष्म प्रणालियों को देखते हैं, तो क्या यह समझ में नहीं आता कि उनके लिए एक नियामक होना चाहिए? इस "संगठक और नियामक" के लिए सबसे अच्छी व्याख्या ईश्वर का अस्तित्व होना है - जिसने इस महान ब्रह्मांड में इस व्यवस्था को बनाया है।
अल्लाह कुरान में कहता है: इसमें तो शक ही नहीं कि आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के फेर बदल में अक्लमन्दों के लिए (क़ुदरत ख़ुदा की) बहुत सी निशानिया हैं (आल इमरान: 190)

3 अल्लाह की ओर से वही आना

तीसरा प्रमाण जो अल्लाह के अस्तित्व को इंगित करता है वह सच्चा वही है जिसे ईश्वर ने अपने अस्तित्व को इंगित करने के लिए इस धरती पर मानवता को भेजा है।

इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि कुरान, इस्लाम की पुस्तक और अल्लाह का कलाम और वचन है। नीचे उन साक्ष्यों का संक्षिप्त सारांश दिया गया है जो इस बात का समर्थन करते हैं कि कुरान वास्तव में अल्लाह का कलाम और वचन है।

चूँकि अल्लाह ने लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए एक किताब उतारी है, इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि इस किताब में उसके अस्तित्व के स्पष्ट प्रमाण होंगे।

कुरान करीम आज से क़रीब 1,400 वर्ष से भी पहले उतारा गया था, फिर भी इसमें कई वैज्ञानिक तथ्य शामिल हैं जो उस समय लोगों को नहीं पता थे और जिन्हें हाल ही में आधुनिक विज्ञान द्वारा खोजा गया। इसके उदाहरणों में शामिल हैं: जल सभी जीवित प्राणियों का मूल है [कुरान; सूरत अल - अंबिया: 30]; और सूर्य और चंद्रमा के अलग-अलग गोले। [कुरान; सूरत अल - अंबियां: 33]।

कुरान करीम में कई ऐतिहासिक तथ्य शामिल हैं जो कुरान के प्रकट होने के समय ज्ञात नहीं थे, साथ ही कई भविष्यवाणियां भी हैं जो बाद में सच हुई हैं।

कुरान करीम में कई ऐसे ऐतिहासिक तथ्य शामिल हैं जो कुरान करीम के नाज़िल (उतरने) होने के समय ज्ञात नहीं थे, साथ ही कई भविष्यवाणियां भी हैं जो बाद में सच हुईं।

23 साल लंबे अवधि में वही आने के बावजूद कुरान करीम किसी भी ग़लती या टकराव से रहित है, जिसमें इस जीवन और उसके बाद के जीवन से संबंधित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

अल्लाह ने पूरे कुरान को उसकी मूल भाषा, अरबी में उतारने के बाद से ही इस को संरक्षित कर लिया है, अन्य पुस्तकों के विपरीत जो अब उस शुद्ध रूप में मौजूद नहीं हैं जो अल्लाह ने अपने पैगंबरों को प्रकट किया था।

कुरान करीम में एक स्पष्ट, शुद्ध और साफ़ साफ़ संदेश है जो सर्वशक्तिमान अल्लाह के बारे में मनुष्य में निहित सहज विश्वास को संबोधित करता है।

आम लोगों पर कुरान करीम का गहरा प्रभाव है जिसे केवल वही महसूस कर सकते हैं जिनके दिल ने इसकी मिठास का स्वाद चखा है।

यह कुरान करीम पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का दरूद व सलाम हो) पर उतरा था, जो पूरे इतिहास में अनपढ़ होने के लिए जाने जाते थे, लेकिन इस कुरान में भाषा की एक ऐसी अनूठी शैली शामिल है, जो दुनया भर में परसिद्ध है। कुरान करीम अरबी बलाग़त और भाषाई सुंदरता का शिखर है।

यह तथ्य कि कुरान करीम अल्लाह की ओर से उतरा हुआ है, इसमें कई अद्वितीय और चमत्कारी तथा मुजेज़ाती पहलुओं की उपस्थिति के लिए सबसे तार्किक व्याख्या है।

अल्लाह मानवता के लिए दिशा निर्देश भेजता है।

ज्यूंहि हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि एक बुद्धिमान रचनाकार है जिस ने हमें बनाया है, तो हमें यह एहसास हो जाता है कि वह हमें हमारे अस्तित्व का उद्देश्य भी सिखाएगा, लेकिन हम यह कैसे जान सकते हैं कि अल्लाह हमसे क्या चाहता है? क्या हम केवल परीक्षण और ग़लती का जीवन जीते हैं, या क्या हम अपने अस्तित्व का उद्देश्य स्वयं ही निर्धारित करते हैं? क्या हम केवल बहुमत के पीछे पीछे चलते हैं, भले ही वे गलत हों?
नहीं, अल्लाह ने हमें हमारे अस्तित्व के उद्देश्य के बारे में बताने के लिए कुछ दूत भेजे और किताबें भेजीं।
सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कुछ दूत भेजे, और प्रत्येक राष्ट्र में कम से कम एक दूत भेजा, उन सभी का एक ही संदेश था: केवल एक अल्लाह की ईबादत करें और उनके मार्गदर्शन का पालन करें। इन दूतों में आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, ईसा और मुहम्मद थे, उन सभी पर अल्लाह का दरूद और सलाम हो।
पैगंबरों की श्रृंखला की पैगंबर मुहम्मद (उन पर दरूद और शांति हो) आखिरी कड़ी थे। वह अब तक के सबसे ईमानदार, न्यायप्रिय, दयालु और साहसी इंसान थे। पृथ्वी के लोगों के लिए उन्हें कुरान करीम के साथ भेजा गया था - ईश्वर की ओर से प्रकट किया गया अंतिम वही लेकर, लोगों को यह सिखाने के लिए कि कुरान की शिक्षाओं को अपने जीवन में कैसे लागू किया जाए।
अल्लाह की ओर से कुरान करीम मार्गदर्शन की एक किताब है, जो लोगों के जीवन की कई मुख्य अवधारणाओं को सिखाती है, जैसे कि हमारे अस्तित्व का उद्देश्य किया है? और हमारा अल्लाह कौन है? और वे कार्य जिनसे अल्लाह राज़ी होता है और प्रसन्न होता है, और वे कार्य जिन को वह पसंद नहीं करता है ऐसे काम से ख़फ़ा होता है, इसी प्रकार पिछले पैगम्बरों की कहानियाँ और उनसे सीखे गए सबक, और स्वर्ग, नर्क और क़यामत के दिन के बारे में जानकारियाँ आदि।
कुरान करीम का उद्देश्य अल्लाह की प्रकृति के बारे में गलत धारणाओं को स्पष्ट करना भी है, जैसे ईसा मसीह की प्रकृति, और उनकी भूमिका को स्पष्ट करना और इसकी तुलना सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रकृति से करना है।
अन्य पैगम्बरों की तरह हज़रत ईसा मसीह (उन पर शांति हो) के हाथ में भी कुछ चिन्ह प्रकट हुए, और उन्होंने लोगों को केवल एक अल्लाह की ईबादत करने के लिए बुलाया (अल मरियम: (36))